सद्गुरु तत्व बोध

SADGURU TATV BODH

ubl fnYyh
vad & 113

Jh lkbl 'kd % 30
tqykbl & 2012

Å¡

AA Jh lkbZukFkk; ue%AA

AA Jh lnxq:ukFk nknk; ue%AA

xq: iwf.kZek

Publisher
Sri Saikalp Adhyatm Sanstha
"Sai Niketan"
New Delhi - 110025
Ph. : 26956561
E.mail : saikalp@gmail.com
dadab6@gmail.com
Web : saishraddha-world.com

Patron
Lalita Bhavani Shankar Bhatte

Editorial
Vijay Kumar Varma
Jogesh Grover

Subscription
Inland
Yearly : Rs.250.00
Life time : Rs.1000.00

Overseas
Yearly : US$ 250.00
Life time : US$ 500.00

Printed By
Shaarp Advertising
Cell : 09810284136

Published Every Month

©All rights reserved with Publisher

xq: cèkHkfxuh

आज की गुरूपूर्णिमा श्रीसाईकल्प आध्यात्म संस्था के कार्य में एक नये अध्याय का शुभारम्भ कर रही है। आज के दिन (3 जुलाई 1993) इस शुभ अवसर पर अमेरिका में 19 साल पहले कार्य केन्द्र की तथा श्रीसद्गुरूनाथ दादाजी की पादुकाओं की स्थापना देवनपोर्ट में हुई, जिसके माध्यम से अब वहाँ के लोगों को सही गुरू मार्ग का परिचय हो रहा है। उसी प्रकार 12 साल पहले 6 सितम्बर 1999 को साई निकेतन दिल्ली में दूसरी श्रीगुरू पादुका की स्थापना हुई।

गुरूमार्ग की उपासना में श्रीगुरू पादिका का महत्व अजोड़ है। श्रीसद्गुरू का वास्तव्य चराचर में है अत: उनके चरण पूजन को अग्र स्थान दिया जाता है। सद्गुरू पादुका में उनके देहिक अवतार का सार तत्व असतत्व में है, प्रत्यक्ष स्वाध्या और स्वानुभव के पश्चात उन्होंने निर्माण किए हुए तत्वों की वह नींव है। यह उनके कार्य की नींव भक्तभाविकों के जीवन का आधार है। यह गुरू तत्व जाने बगैर कोई तीर्थ यात्रा, जाप या साधन करना केवल व्यर्थ है। श्री गुरू के चरण पूजन से सभी पापों को निमूर्लन होता है तथा अंत:करण पवित्र और शुद्ध बनता है। गुरू चरण जल का मस्तक पर सिंचन करने से सभी तीर्थों में स्नान करने का पुण्य फल मिलता है। गुरू चरणों का तीर्थ ज्ञानरूपी तेज को और भी उज्ववल बना देता है इसीलिये श्री दत्तात्रेय के किसी भी स्तवन में गुरू पादुकाओं का अवश्य उल्लेख किया जाता है। अपने कार्यकेन्द्रों

पर जो भी आरती हम गाते हैं उनमें श्री गुरूचरणों की महिमा का वर्णन किया गया है। जैसे सगुण मूर्ति मनोहरा, पाई पादुका सुन्दरा, दत्ताचे पाई आम्ही वस्ती केलि अखण्डा, दत्तगुरू माझे आई चरण सुख सदा देहि, पाया चिया सेवा कराभिआस, इन आरतीयों में हम बार बार गुरू चरणों को वर्णन और उनकी महिमा का गुणगान गाते है परन्तु जब भक्त सचमुच ही गुरू चरणों में लीन होता है तब उनके सहत्रकमल या ब्रह्मरंध्र में ये दो पादुकाएँ वास्तव में तीन तत्वों के रूप में रूपांतरित हो जाती है। बाया चरण यानि चन्द्रबिम्ब, दाहिना चरण यानि सूर्यबिम्ब तथा सहस्त्र चरण यानि तीसरा बिम्ब ऐसा विधान है। ये तीनों में के तत्व जब एक रूप होते हैं तब दो चरणों का अद्वैत अस्तित्व में नहीं रहता। वहाँ सिर्फ तीन तत्वों का सार एकत्रित हुआ रहता है। ये तीन तत्व है – दत्त, सूफी और नाथ। दत्त गुरू की उपासना, सूफी का ईश्वर की प्रति निःस्वार्थ प्रेम, और नाथ पंथियों का योगतत्व इन तीनों का वंदनिय दादा जी ने सुन्दर, अजोड़ संगम किया तथा इसके द्वारा अपने भक्तों को मनुष्य जीवन का सार्थक करने का सही अर्थ भक्तों के साथ खुद सामान्य पथ पर रह कर सिखाया।

अवतारी पुरूषों का गुरूतत्व, उनके गुणों की स्तुति उनके अवतार समाप्ति के बाद ही ज्यादा समझी जाती है। पं. पू. श्रीसाईनाथ महाराज की महानता भी किसी तरह उनके समाधिस्थ होने के बाद लोगों को मालूम हुई। क्योंकि उनके जिन जीवन मूल्यों को ये संत सदेह अवस्था में अपनाते हैं उनका आकँलन उनके देह के रहते लोगों को उनके निकट सहवास के कारण मालूम नहीं होते मगर उनके विदेह अवस्था में ये शास्वत तत्व पीछे रह जाता है और अजरामर होता है। अगणित भक्तों के लिये वह मार्गदर्शक बनता है जिसका अनुभव और प्रचिति असंख्य भक्तों को मिलती रहती है। फिर श्रीसद्गुरू दादाजी इसका अपवाद कैसे होगें।

श्री सद्गुरूनाथ दादाजी के पादुकाओं का पूजनविधि जो हर कार्यकेन्द्र पर हुआ (अमेरिका जाने से पहले) उसका वर्णन शब्दों के परे है। 12 जून 1997 के निवेदन में गुरूपादुकाओं का महत्व बता दिया गया था जिसका अध्ययन आपने किया होगा।

गुरूपंरपरा कार्य में साधक जिस शक्तितत्व को प्राप्त कर लेता है तथा अपनी प्रखर तपोसाधना से वह जो कुछ शक्ति प्राप्त कर लेता है उसे अपने भक्तों में संक्रमित करना बहुत ही कठिन शास्त्र है, इसी प्रकार यह शक्ति उन भक्तों के माध्यम से दुनिया के दुःखी लोगों का दुःख निवारण करने के लिए प्रवाहित हो ऐसा साधन करना उससे भी अधिक कठिन है। पर यह अनोखा कार्य श्रीसद्गुरूनाथ दादाजी ने एक ही सेवक के जीवन में नहीं बल्कि अनेकों के जीवन में कार्यान्वित किया है जिसका अनुभव हम ले रहे है।

असामान्य सत्पुरूष वाह्य रूप से सामान्य दिखते हैं फिर भी उनकी हर क्रिया, शब्द, हर विचार विश्वव्यापी होता है उनका समूचा जीवन अनेक जन्मों का सार होता हैं श्रीसद्गुरूनाथ दादा का असली स्वरूप, उनके मन की गहराई, उनके विचार किसने जाने? हर किस्म के लोग इकठ्ठे हो, हर किसी को अपने जन्म का सही ज्ञान हो इस उद्देश्य से दादाजी ने असीम परिश्रम से अपना जीवन व्यतित किया मगर कभी बड़प्पन न दिखाया। यह कार्य किसी एक व्यक्ति का नहीं है, सबका है इस भावना का अंकूर उन्होंने हर व्यक्ति के दिल में पनपाया और हर एक को इस कार्य में शरीक होने का अवसर दिलाया। आज हर व्यक्ति दूसरे से स्वभाव, पसंद, विचार–आचार, कर्म तथा ऋणानुबंध के अनुसार अलग है। हर व्यक्ति की बुद्धि तथा ग्रहणशक्ति भी भिन्न है, ऐसा दिखाई देता है। एक ही कक्षा में पढ़नेवाले विद्यार्थी जिनके शिक्षक तथा पढ़ाई के विषय एक होने पर भी बुद्धि माध्यम से भिन्न नजर आते है। फिर क्या यह सोचने की बात

नहीं है कि गुरूशक्ति का स्त्रोत अनेक सेवक माध्यमों द्वारा दुनिया के दुःखी लोगों के लिए एक ही साधन से समान रूप में किस तरह प्रवाहित हो रही है! तथा इसके लिए किस प्रकार की साधना, किसी किस्म की कार्यकारण भावना कारण हुई होगी इसका अंदाजा लगाना मुश्किल है। आध्यात्मिक विषय के शब्दों को केवल शब्दरूप में ही सीमित न रखकर दादाजी ने उन्हें मूर्त स्वरूप दिया और हम सबको उनकी अनुभूति दी तथा गुरूमार्ग या आध्यात्म शास्त्र विचारों का बवंडर न होकर अनुभूति का ज्ञान है ऐसा हमें अनुभव दिया।

किसी अलौकिक सिद्धांत की निर्मिती करना यह कोई आसान बात नहीं है। हर रोज की जिंदगी में जिन भौतिक सुखो का लाभ हम सहजता से उठाते हैं, उन सुखसुविधाओं के पीछे किसी एक शास्त्रज्ञ का बलिदान होता है। सोचिये कि इसीतरह आध्यात्मिक शास्त्र में जिन साधनाओं का निर्माण दादाजी ने किया उनके पीछे कितनी यातनाएँ, लोकापवाद, सामाजिक उलाहना, तथा कष्ट और पीड़ा होंगी? पर दादाजी ने अपने 'आत्मनिवेदन' में इनमें से किसी का भी जिक्र नहीं किया, न ही कभी किसी बात की शिकायत की! – इसे सोचना हमारा फर्ज है।

श्रीसद्गुरूनाथ दादाजी ने जो भी सिद्धता की उसके फल अनगिनत भक्तो के जीवन में साकार स्वरूप में आज अनुभव को आते है। 'कर्म का फल सब को भुगतना पड़ता है उसके लिए भगवान की कृपा का सहार्य ले लो' इस तत्वज्ञान को दादाजी ने बदल दिया और कर्मफल को उपभोग के माध्यम में बदलने के लिए 'कर्मविमोचन' साधन सिद्ध किया। हमारे वंशजों की मुक्ति के लिए शास्त्रों ने जो त्रिस्थली यात्रा का प्रंबध कर रखा था उसे 'वशविमोचन' विधि के रूप में हमें उपलब्ध करा दिया और 'गुरूदीक्षा' याने आचार विचार उच्चारों में स्थित्यंतर यह सिद्धांत साकार कर दिखाया।

पानी या आपतत्व जीवन का रूप हैं जो गुरूशक्ति या तेजतत्व हमें धारण करना है, वह आपतत्व माध्यम से सुलभतापूर्वक धारण किया जा सकता है, इसलिए भगवान की मूर्ति को अभिषेक करके हम वह तीर्थाशन करते है। श्रीसिद्धगुरूनाथ दादाजी के रूप में जो असीम तेजतत्व इस धरती पर अवर्तीण हुआ था उसे धारण करने के लिए निसर्ग का आपतत्व कार्यान्वित हुआ। दादाजी की 'अंतिम यात्रा' के दौरान उनके देह पर जलधाराओं ने फूल बरसायें। उनके अस्थिविसर्जन के समय समुदर में बड़ी बड़ी लहरें उभरी और सागर में ज्वार–भाटा उत्पन्न हुआ। उनके प्रथम शुभदिन 20 जून 1992 के अवसर पर जब उस शक्ति की दीक्षा 'तारकमंत्र' के रूप में दी गई उस दिन सुबह तेज वर्षा हुई। अब अमेरिका में केन्द्र की स्थापना होकर वहाँ के लोगों को कार्य का परिचय तो होगा ही, मगर श्रीसद्गुरूनाथ दादाजी के पादुकाओं का आगमन जब पीछले 3 जुलाई 1993 को हुआ उस रोज तथा बाद में अमेरिका में गर्मी के मौसम में भी काफी वर्षा हुई और डेव्हनपोर्ट के पास मिसीसीपि नदी का पानी तेज बहाव से बहने लगा था।

निसर्ग को जो ज्ञान हुआ है, वह हम मानवों को – जो निसर्ग के ही समीप रहते है – उन्हें कब होगा? श्रीसद्गुरूनाथ दादाजी की निर्गुण निराकार शक्ति जो तन्मात्र के स्वरूप में हमारे करीब है, उसका लाभ अगर हमें लेना है तो हर दिन की दैनंदिन साधना हमें मनःपूर्वक करनी चाहिए तभी हममें ज्ञानदीप उजागर होगा। यह कार्य उनकी दुवा से हो जाये इसके लिए आज गुरूपौर्णिमा। श्री जगतगुरू साईनाथ महाराज पुण्य विभूति तथा श्री सदगुरूनाथ दादा महाराज का पुण्य स्मरण करके कृतज्ञता व्यक्त करने का पवित्र दिन! मनुष्य जीवन अनेक ऋणानुबंधों के धागों से बुना हुआ है। एक एक ऋण का हिसाब चुकाते वक्त जीवन किस तरह व्यतीत हो जाता है इसका पता ही नहीं चलता। इन ऋणों में मगर एक ऋण ऐसा

है जिस में से मुक्त होने की इच्छा होती ही नहीं। इस ऋण के दायरे में अपने आपको जन्मजन्मान्तर तक जकड़ लेने में ही जीवन की सार्थकता होती है – यह ऋण है अर्थात "गुरूऋण" आज इस शुभ दिन के अवसर पर हमें श्रीगुरू का स्मरण करके कृतज्ञता व्यक्त करनी चाहिये।

स्मरण का अर्थ है याद। वंदनीय दादा जी का कहना है।

जिन्दी गुजर जाती है, याद बाकी रहती है
दुवा एक बार मिलती है, हर जन्म साथ रहती है

tue tue dk lod

AA'kHk HkorAA

मेरा वजूद का एक–एक कतरा गुरू की इनायत ने बनाया है
बीना अखण्ड कृपा के उसका राज; मालिक का समझ न आया है
मुझ नाचीज़ को भी बिठा के गोद में, अपनी हर कर्म और दोश मेरा गुजरे वक्तों से ही हटाया है
कितने जन्मों से मैं गुनाह किये जाता हूँ, मेरी खताओं को मुस्कराकर माफ फरमाया है
तेरा जर्रा हूँ भला में किस काबिल हूँ, सर तेरे दर में झुका कर सबक पाया है
कि रोम रोम से झुक के तुझे में सज़दा करूँ, यही आज मेरी आत्मा ने धीमे से मुझे समझाया है
तेरा वलय में ही डूबूँ, वो सदा साथ रहे। जीवन मैनें यही पाया है

विनम्र निवेदन

अति हर्ष के साथ आप सभी गुरुबंधु एवं भगिनियों को सूचित किया जाता है कि मासिक पत्रिका "तत्व बोध" का आगामी अंक एवं अन्य सूचना वेबसाइट पर एवं मेल द्वारा प्रेषित की जाएगी।

अतः आप सभी गुरुबंधु एवं भगिनियों से अनुरोध है कि आप सभी अपना ई–मेल पता एवं अन्य जानकारी यथाशिघ्र निम्न पते पर प्रेषित करें :

Sri Saikalp Adhyatm Sanstha

"Sai Niketan"

5, Jasola Vihar, New Delhi - 110025 Telephone : 26956561

E-mail : saikalp@gmail.com dadab6@gmail.com

Please send your yearly subscriptions as early as possible